# वेटरनरी में नई दवाइयों की खोज और टीकों के लिए बन रही आधुनिक प्रयोगशाला

## विशेष प्रजाति के चूहों, माइस, गिनीपिग, हेमस्टर तथा खरगोशों पर होगा अध्ययन

हमारे संवाददाता | जबलपुर। पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय में जल्द ही एक ऐसी आधुनिक प्रयोगशाला बनकर तैयार हो जाएगी जहां विशेष प्रजाति के चूहों, माइस, गिनीपिग, हेमस्टर और खरगोशों को रखकर उन पर अध्ययन किया जाएगा। इसके साथ ही नई दवाईयों की खोज और नए टीके बनाने के लिए विशेष प्रयोग किए जाएंगे। इस परियोजना पर कुल करीब पौने तीन करोड़ रुपयों का खर्च आएगा, यह राशि मध्यप्रदेश कृषि मार्केटिंग बोर्ड भोपाल द्वारा दी गई है। परियोजन से जुड़े प्राध्यापकों का कहना है कि पशुओं की कई बीमारियां ऐसी हैं, जिनकी रोकथाम के लिए अभी भी दवाईयां नहीं मिल पाई हैं, कई बीमारियों के टीके बनाए जा सकते हैं पर पर्याप्त अध्ययन नहीं हो पाने के कारण ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है, इसलिए अब कई असाध्य पशु रोगों के अध्ययन के लिए ही नई प्रयोगशाला बनाई जा रही है। इसमें कुल 12 कमरे तैयार हो रहे हैं, जिसमें पशुओं को सुरक्षित तरीके से रखा जाएगा और उन पर प्रयोग किए जाएंगे। बताया जाता है कि लैब अतिविशिष्ट है, इसे देश के सीपीसीएसईए तथा अंतर्राष्ट्रीय लैब एनिमल रेगुलेशन द्वारा बनाए गए नियमों के आधार पर ही बनाया गया है, ताकि जानवरों को आराम मिलता रहे तथा उन्हें रोगों एवं अनावश्यक दर्द से बचाया जा सके। इस लैब में पशुओं के रहने की अलग-अलग व्यवस्था होगी। सभी कमरों में विशिष्ट वातावरणीय व्यवस्था रखी गई है जिनमें 18 से 25 डिग्री के बीच तापमान रखा जाएगा।

### मुख्य बिन्दु

- जीवाणु रहित या ऑटो क्लेव की गई सामग्री ही अंदर जाएगी
- हर कमरे में सीसीटीव्ही कैमरे होंगे जिनसे जानवरों की निगरानी होगी
- क्वारेन्टाइन क्षेत्र बनाया गया है ताकि बाहर से आए जानवरों को कुछ दिन रखा जाए
- हर किसी को वहां जाने की अनुमति नहीं होगी
- 2.73 करोड़ की है पूरी परियोजना
- 5 हजार 4 सौ वर्गफीट में बन रही प्रयोगशाला